SKC/2E/3.00

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (contd.): We have forgotten to protect the earthworm. The protection of earthworm is directly related to organic farming. Organic farming is directly related to the health of the ecology, the environment and human beings. What is happening to soil health all over in the absence of earthworms is well known not only to the illiterate farmers of our country, but also to our extraordinary agricultural scientists. Yet, we are not able to protect the earthworms. Not just the earthworms, we are not able to protect the frogs and tortoises either. Where is this leading to? We advocate and champion the cause of protection of our biodiversity, but until and unless we protect the original natural resources such as earthworms, frogs and tortoises, we won't be able to protect organic farming. How are we going to protect agriculture in the real sense?

Sir, recently, I travelled to Maharashtra. I visited the Kaneri Math at Siddhagiri, the place of Kolhapur Maharaja. Sambhaji Maharaj is here in this House. In the *Siddhagiri gowshala*, I saw the rarest of the rare breeds of cattle and cow. *Sahiwal, khillari, dangi, ongole* and other breeds are not seen in their original form in our agricultural fields, but I could see the rarest of the rare breeds of cow of not just India, but of the world there. I visited

Narasimha Wadi on the banks of the Krishna River, just 70 kilometres away from Kolhapur. Even there I could see the commitment, care and concern to protect the original breed of cattle so as to protect organic farming and to preserve the traditional knowledge, the real treasure of our natural breeds, and the relevance of our indigenous breeds. In this context, I would like to again talk about my own State, particularly Andhra Pradesh's, *kodi pandalu*. It looks odd in these modern times, but it is *shastra*, respected, Sir; it is *kukkuta shastra*. It has got astronomical and astrological relevance. The colours of the fighting cocks, especially the winning cocks, were used to adjudge the relevance of planets and their effects in a particular year. They are centuries and millennia old. There was a necessity to depend on them because they did not have ready calculations or calendars. They used to depend on this *kukkuta shastra*, these cock fights, during the time of *Sankranti, Maha Sankrati or Makara Sankramana*. Likewise, *jallikattu* and all other traditional fights have their significance. It is not just for encouragement and enthusiasm, but also to protect the nativity of breeds. Can anybody imagine a hybrid variety of the bull taking part in *jallikattu*, bull fights in Rayalaseema or bullock cart races in Telangana? Only the native, original and well-bred bulls can take part in such races.

(CONTD. BY HK/2F)

LP-HK/3.05/2F

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (CONTD.): These are having the relevance directly to the traditional knowledge and their preservation. Hence, I appreciate the initiative of Tiruchi Siva*ji* to focus on this vital aspect and to lead towards preservation of traditional festivities involving animals. At this juncture and in this context, I plead to the modern and the newer generation, while you take part in those traditional heritage-oriented festivities and competition between animals, ensure to have humanitarian ground and ensure not to give them any sort of anaesthesia-type of medication just to win your race. This is the reflection of the traditional heritage of Indian sub-continent to protect that. We need to have the traditional capacities to continue our activities with the modern understanding of the age-old traditions. For that, the initiative by Tiruchi Siva*ji* is appreciable and I welcome it. Thank you, very much.

(Ends)

श्री बसावाराज पाटिल (कर्णाटक) : माननीय उपसभापति जी, आदरणीय श्री तिरुची शिवा इस हाउस में आज जो खास Resolution लाए हैं, उसके लिए मैं कहना चाहूंगा कि वे एक बहुत महत्वपूर्ण विषय लेकर आए हैं। सरकार को इस पर बहुत गंभीरता से

सोचते हुए इसके सभी पहलुओं पर विचार करना चाहिए। उन्होंने अपने अध्ययन के द्वारा यह जितना बड़ा काम किया है, उसके लिए मैं श्री तिरुची शिवा का अभिनंदन करता हूं।

आधुनिकता के नाम पर हम अपनी वास्तविकता और कुछ परंपरागत सच्चाइयों को कितनी दूर तक नजरअंदाज कर सकते हैं और इसके क्या दुष्परिणाम होते हैं, इसके बारे में हमें गंभीरता से सोचना होगा। एक जमाने में भारत में केमिकल्स और फर्टिलाइजर्स के कारण पंजाब दुनिया का सबसे आकर्षक स्थान बना, लेकिन आज पंजाब सबसे ज्यादा कैंसर रोग पाया जाने वाला राज्य बन गया है। इस प्रकार तात्कालिक सुख के लिए, थोड़े समय के आनंद के लिए अनंतकाल के दुख को भोगना देश के हित में ठीक नहीं होगा। भारत की जो संस्कृति है, जीवन शैली है, वह उत्तम है।

उपसभापति जी, एक होती है घर की माँ, दूसरी धरती माँ और तीसरी गौ माता होती है। इन तीनों माताओं के बीच में एक अन्यान्य संबंध है, जिसके आधार पर यह सृष्टि चलती है। भारत की गाय के गोबर, भारत की गाय के गौमूत्र के द्वारा जमीन की फर्टिलिटी बढ़ती है। घर की माँ उसके उत्पाद को यूज़ करती है, घर के बाल-बच्चों को और सबको दूध पिलाती है। इसके कारण जो एक सुंदर वातावरण बनता है, वह घर के लिए बहुत आनंददायक होता है। इस महत्वपूर्ण गाय की रक्षा आवश्यक है।

उपसभापति जी, हमारे देश में इसको कामधेनु कहा गया है। इसको केवल नाम के लिए कामधेनु नहीं कहा गया है, बल्कि इसलिए कहा गया है कि यह बहुत उपयोगी जंतु है। जब गाय के दूध से घी बनता है, तब उसमें ऑक्सीजन की मात्रा 47 परसेंट तक

पहुंच जाती है। इतना ही नहीं, सृष्टि के अंदर गाय एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो ऑक्सीजन लेती है और दुनिया को वापस ऑक्सीजन देती है। दूसरा अन्य कोई प्राणी ऑक्सीजन लेकर दुनिया को वापस ऑक्सीजन नहीं देता है। ऐसी कई चीज़ों के कारण उनके इस Resolution को रखने का समर्थन करते हुए मैं सरकार से विनती करता हूं कि अपने देश की जो भी परंपरागत ब्रीड है, उसका जो गोबर है, जिसके अन्यान्य उपयोग के कारण अच्छा अन्न बनता है, अच्छे फल बनते हैं, अच्छी तरकारी बनती है, इन सब चीज़ों को छोड़कर, हमारी जेनरेशन केमिकल्स के नाम पर जो एक बरबादी की ओर चली जा रही है, उसको रोकना होगा। इसके कारण आज का अन्न खाकर हमारी सारी कमाई एक प्रकार से हॉस्पिटल को जा रही है।

(KLG/2G पर जारी)

KLG-KSK/2G/3.10

श्री बसावाराज पाटिल (क्रमागत): नेपाल हमारा पड़ोसी देश है, उस देश के अंदर आज भी गाय को एक राष्ट्रीय प्राणी के नाते स्वीकार किया जाता है। वहां जिस प्रकार एक मनुष्य के ऊपर आहत करने पर जितना बड़ा अपराध माना जाता है, उतना ही बड़ा अपराध गाय के ऊपर आहत करने पर माना जाता है। हमारे देश में परंपरागत गौ की आने वाली कितनी ही रेस हैं, जैसे कि हमारे कर्णाटक में देवणी है, मलेनाडुगिड्डा है, खिलारी है, कृष्णवेड़ी है। आज इस प्रकार की अलग-अलग जाति की गौ-संपत्ति अपने देश के अंदर है, जिनका विकास होना चाहिए और जिनके आधार पर हमारा विकास होना चाहिए। इससे न केवल पैसे बचेंगे, बल्कि इंसान स्वस्थ रहेगा, आरोग्य रहेगा और

आरोग्य रहने के कारण आदमी स्वस्थ रहेगा और जो पैसा रोज दवाखाने को जाता है, वह भी बचेगा। आज कैन्सर, इत्यादि नाम के भयानक रोग जो अपने देश को खा रहे हैं, उससे भी हम बच सकते हैं। अपने देश की एक-एक ब्रीड की महत्ता इतनी है कि अगर आज भी वर्ल्ड में दूध का कॉम्पिटिशन होता है, तो the top two highest milk-yielding breeds in the world are Indian breeds. इसमें वर्ल्ड कॉम्पिटिशन में आंध्र प्रदेश की होंगल 49 लीटर तक दूध देती है। इस प्रकार इतिहास के पन्नों में आधुनिकता के नाम पर हम अपनी कुछ मौलिक चीजों को खो बैठे हैं। हमने अभी तक जो गलती की है, वह की है, लेकिन इसे आगे ले जाना आत्मघातक होगा। मुझे एक प्रकार से डर लगता है कि अगर इसी प्रकार का नेग्लिजेन्स रहेगा, तो शायद हमें अपनी सभी ब्रीड्स को एक एग्ज़िबिशन की वस्तु के रूप में देखना पड़ेगा। बाद में इसके अभाव में हम जिंदगी में कितने भी तड़पेंगे, हमारी गई हुई वह मौलिक संपत्ति हम वापस नहीं ला सकेंगे। इस प्रकार यह हाई-ब्रीड, जिसमें न आनंद है, जिसमें न आरोग्य है, जो स्वास्थ्य के लिए उपयोगी नहीं है, विश्व में यह साबित हो गया है कि भारत का ए-वन और यू-वन दूध और उसके सभी प्रोडक्ट्स मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए और नाना प्रकार के रोगों से मुक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं। इन सब चीजों को जानते हुए मैं आदरणीय तिरुची शिवा जी के इस महत्वपूर्ण संकल्प का समर्थन करता हूँ।

उपसभापति जी, मैं अभी गुजरात गया था। अहमदाबाद में इसकी 12 जातियां हैं, जैसे नक्षत्र होते हैं, ऐसे 12 प्रकार हैं। एक विदेशी कंपनी वालों ने एक नंदी, he asked for Rs.8 crore to purchase that bull. वे क्या करते हैं कि उसे ले जाते हैं

और सीमेन क्रॉस ब्रीड कराते हैं, उससे 80 करोड़ रुपए कमाते हैं। जैसा तिरुची शिवा जी ने कहा, जैसे मनुष्य की फीलिंग्स होती हैं, वैसे ही प्राणियों की भी फीलिंग्स होती हैं, नेचुरल ब्रीडिंग होनी चाहिए। नेचुरल ब्रीडिंग के आधार पर जो उत्पत्ति होती है, वह अनंत काल के लिए, स्वास्थ्य के लिए, अपने जीवन के सुखी जीवनयापन के लिए महत्वपूर्ण होती है। इन चीजों को ध्यान में रखते हुए हमारे देश में इन फर्टिलाइजर्स से छुट्टी लेना जरूरी है। आज जनता की तरफ से तेजी से यह आवाज आ रही है और लोग ऑर्गेनिक फूड की तरफ जा रहे हैं, ऑर्गेनिक आहार के पीछे आज लाइन लगा कर खड़े हो रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह तरकारी चाहिए, हमें यह चीज चाहिए। इस प्रकार भारत की अपनी जो अनमोल संपत्ति है, जो गौ-वंश है, इसके पीछे केवल धार्मिक भावनाएं नहीं हैं। यह एक सहज बात है कि अगर मेरे कष्ट में किसी आदमी ने कोई सहायता दी, तो हम उसे याद करते हैं, उसे स्मरण करते हैं, वैसे ही एक गाय के इस देश में जन्म लेने के बाद, उसकी मृत्यु के बाद भी अगर उसे गाड़ा जाता है, तो दो साल के अंदर जमीन से जो उसका कैमिकल एक्शन होकर निकलता है, वह लगभग आठ हजार रुपए का एक प्रकार का फर्टिलाइजर बन कर निकलता है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Time is over. Please conclude.

श्री बसावाराज पाटिल: इन चीजों को ध्यान में रखते हुए, माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से सरकार से विनती करता हूँ कि तिरुची शिवा जी के इस संकल्प को सरकार बहुत गंभीरता से ले और इस देश की अनमोल संपत्ति को बचाकर एक स्वस्थ

भारत का निर्माण करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण काम करे। मैं यही प्रार्थना करता हूँ, धन्यवाद।

(समाप्त)

(2H/जीएसपी-एकेजी पर आगे)

GSP-AKG/2H/3.15

MR. DEPUTY CHAIRMAN: As Mr. La. Ganesan has to catch a flight, let me call him first. Of course, Mr. Jairam Ramesh has agreed.

SHRI JAIRAM RAMESH: But, Sir, he should listen to me also.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, yes. He will be happy to listen to you. At least, the Chair will listen to you. Don't worry.

SHRI LA. GANESAN (MADHYA PRADESH): Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank you for the opportunity given to me. Sir, I whole-heartedly support the Resolution moved by my friend, and, hon. Member of this House, Shri Tiruchi Siva. I went to him and appreciated the way the Resolution was drafted and the way he spoke while presenting the Resolution. Sir, I am here to support this Resolution. वास्तव में यह Resolution बीजेपी के मेम्बर द्वारा present किया जाना चाहिए, लेकिन अगर इसको डीएमके के मेम्बर present करते हैं, तो मुझे बहुत खुशी होती है।

Sir, I will make one or two brief points as all the points have been mentioned by Siva ji and are mentioned in the Resolution also. Sir, now-a-days, the dogs, our local, Indian dogs, swadeshi dogs, are not seen. In Tamil Nadu, we call rajapalayam dog or kombai dog, which is very watchful, and which is a traditional one. Now-a-days in houses also, the pet dogs are there. They never bark, they never bite but they are called dogs. This is the position everywhere.

Let us take the example of a variety of rice seed, *Japonica Indica*. It is a cross-breed between the *videshi* seed and Indian seed. We eat that rice, and, so, in our blood also, already the *videshi* and *swadeshi* are mixed. In the same way, as he rightly mentioned, there are cows and the bulls. Our Ongole bull, Kangayam bull, or, even Sindhi also, are not prevalent now-a-days. Gradually, they are decreasing now. Only to get more milk artificially, we are bringing more and more jersey cows and other cows. Already Mr. Siva has mentioned about the capacity of the milk, the strength of the milk, and the protein content of the milk. Sir, we all are consuming that. Gradually, a day will come when you won't be able to call yourself an Indian. When everything is mixed, our blood will also be mixed blood. Only

swadeshi will not be there in our blood. So, I think, a very important point has been mentioned by Mr. Siva, and, I agree with him.

Sir, as far as Jallikattu is concerned, it is a blessing in disguise. The main thing was to give permission to conduct Jallikattu. Of course, with the efforts of the State Governments and with the cooperation of the hon. Prime Minister and the Central Government, we were successful in conducting Jallikattu. Sir, what has happened is that, *saath-saath*, an awareness has come in the people of Tamil Nadu, particularly, kisans, students and youngsters, that they have to protect our swadeshi cows, swadeshi bulls. That is an important thing. Now, immediately after all this, Mr. Siva has moved this Resolution. So, Sir, once again, I say that I whole-heartedly support this Resolution. Sir, Jallikattu is observed for only one day in a year. For all the other 364 days, the bull is maintained only for breeding, for production just as the indigenous cows. This is the most important aspect. We don't simply want to protect the celebration of Jallikattu but the maintaining of the cows for that purpose is very important. This has created awareness in Tamil Nadu. That is why, I whole-heartedly support this move. There are some things which people are not aware of. They should be properly educated. The *kisans* or other people grow their cows or bulls in

their houses but after some time, after a particular age, when that animal is not useful for ploughing, or, if some cows are there, which are not able to give milk, then, they sell it. As he himself rightly mentioned, now-a-days, it has been found that if only the urine and the dung of these animals are properly maintained, it can give more income to the *kisan* than what he can get from the cows that give milk. (Contd. by SK/2J)

SK/2J/3.20

SHRI LA. GANESAN (CONTD.): This has been proved beyond doubt. Awareness should be created among the *kisan* also. One more thing is that transportation of cows also is very cruel. I also demand, it is not mentioned in it, that transportation of the cows should be stopped. Most of the cows and bulls are transported to Kerala for butchering. That should also be stopped. Also, the cows are transported in a very inhuman way.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: There are more incidents of cancer in Kerala because of that, I am telling you.

SHRI LA. GANESAN: That is why in one short sentence, I would say in Tamil, '*nattai padukakka vendum, aanal mattaiyum padukakka vendum*.'

(Ends)

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (TAMIL NADU): Thank you, Mr. Deputy Chairman, Sir. We all really stand with the farmers and also the traditional way of ploughing by farmers in our place, especially in our State of Tamil Nadu, which is actually a State of agriculture. People, mainly our forefathers, they all depended only on agriculture as their main source of income. So, as I come from an agrarian State, I do want to put forth my views. First of all, I have to thank the Central Government on behalf of people of Tamil Nadu for early clearance of the Jallikattu Bill, which paved the way for the conduct of Jallikattu this year in the State. As rightly pointed out here by my colleague, the organic farming has to be promoted in the nation as general. Cattle manure has been traditionally used in India as a fertilizer, which has been clearly brought out here.

(THE VICE-CHAIRMAN, SHRI BHUBANESWAR KALITA, in the Chair)

I also want to state here that Tamil Nadu being the first in agriculture industry, our then hon. Chief Minister, a mass leader and our revered, Dr. *Puratchi Thalaivi Amma*, set up five model villages to promote organic farming. Tamil Nadu will boast of its eco-friendly organic villages. As part of its efforts to promote organic farming, the Tamil Government, under the dynamic leadership of our late leader, hon. *Puratchi Thalaivi Amma*,

announced five model organic villages in Vellore, Erode, Dharmapuri, Tiruvannamalai and Krishnagiri districts. The eco-friendly initiative was taken to strengthen the integrated pest management, that is, 150 eco-friendly villages were set up in the State. She made this announcement in the wake of concerns over the deterioration of organic content in the soil. A programme under the Centre's National Mission for Sustainable Agriculture would ensure the villages to adopt no-pesticide, no-insecticide concept to promote organic farming. Based on these pilot projects, a number of villages were raised. She also announced seven new liquid bio fertilizer production units and two organic fertilizer testing units besides a laboratory complex in the Department of Organic Agriculture at the Tamil Nadu Agriculture University. Incidentally, out of 17,500 fertilizer samples tested by the fertilizer control laboratories in the State, 635 samples were found to be non-standard and legal action was initiated against the defaulters. Another major announcement which the Government made under the leadership of hon. *Puratchi Thalaivi Amma* was selling of *Amma* seeds. *Amma* seed was proposed and Amma outlets were formed across the State.

(Contd. by YSR/2K)

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (CONTD.): In a bid to encourage farmers to use high quality certified seeds, the Government set up Amma Seed Agency by coordinating with the Government Seed Farms, Seed Production Units and farmers. The agency was set up with adequate staff at Rs. 156.74 crore. The quality seeds produced here will be supplied as Amma seeds through Amma outlets at reasonable rates. This is one part of the Tamil Nadu Government's efforts to intensify grain production for the fiscal year. Despite poor monsoon, grain production stood at 110,00,000 tonne per year. Despite the monsoon failure, the grain production shot up thanks to the farmers who switched to millet cultivation instead of water-intensive paddy crop.

I also wanted to put forth here one thing which is about the traditional ploughing methods used by farmers. Why have they gradually reduced using them? Why have they started using tractors which run on diesel? Because that was time-consuming and the farmers wanted to speed up the process. Earlier when they used to start ploughing the field in the morning, it used to go on up to two o'clock or three o'clock. Now everything is about time management. This is the ground reality.

Coming from farming background, I know this. Earlier, many people from rural areas used to come to do all kinds of jobs like ploughing the field and weeding. Nowadays we don't get people for these jobs. Why? Because it is time-consuming. The traditional way of ploughing the field used to take a lot of time. Gradually, people started using tractors. That also should be looked into.

Bulls are part and parcel of our life. We rear them as our children and we take care of them. Then they are used for bull-taming sport. It is our tradition. It is a heritage of Tamil tradition. These bulls were fed like a child. They were fed all good things. They were happily kept at home.

In Spanish bull fighting, bulls are killed. But here bulls are pampered. We only rear them for keeping up with our tradition and culture. Jallikattu has become a part and parcel of our life. After the Government passed the legislation, it is going to be a regular event in our State.

Use of cow dung is a natural way of improving soil health. It enhances soil fertility. This way we can reduce the use of fertilizers and pesticides. The use of cow dung, which is popularly known as gobar gas, gives healthier and more fertile soil. We have to take a turn from here to there. But the main thing is that people have gradually stopped using traditional

ploughing methods. Now the people have become aware of time management and they want more things to be done in a short duration.

(Contd. by VKK/2L)

-YSR/VKK/2L/3.30

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (CONTD.): The ground reality is that we don't get farmers. Why? Improve farming methods and encourage farming among people. Minimum support price is not there. There is frequent monsoon failure. So, there was no harvest and many people lost their paddy. They lost their crops. It was burnt. So, we are looking forward in this regard. We want the farming community to be lifted up. We have to encourage farming. We have to give them proper education. Give them proper techniques and give them more. Most of the farming community leave farming because they don't get what they have invested in it. So, they move out. They sell their lands. If it is in city, they sell their land for exorbitant rates and real estate owners benefit. Then, what happens to farming? In a few years, or in another 10-20 years, we will have money but where will be food?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Please conclude now.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: So, we have to make improvement in the whole thing. Improve farming methods and give them latest techniques and methods. We have to encourage farming. We have to give them Minimum Support Price and give them whatever they have spent. It has to be profitable for the farmers. Farming should become more profitable. That is the main thing. I support it and I also congratulate him. A battle has begun. The view of the Central Government should be as to how to improve agriculture in India and how to improve the living standards of farmers in India and how to make farming community more blessed in this country. Thank you so much.

(Ends)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Thank you. Next speaker is Mr. B.K. Hariprasad.

SHRI B.K. HARIPRASAD (KARNATAKA): Thank you, Vice-Chairman, Sir. I rise to support the Resolution moved by Mr. Siva on agrarian issues. Sir, as you know, in this country, almost 65 per cent of the population is involved in agricultural activity. In terms of contribution to the GDP, agriculture may not contribute more than 20 per cent, but in terms of the employment generation, it contributes almost 54 per cent. When compared to the service

sector, agriculture contributes almost 54 per cent and employment generation of service sector, I think, is around 18 per cent. Mr. Siva has moved this Resolution and it is regarding the agricultural activities. We all know this. It is an age-old practice. Animals and human beings co-exist in this world and in this country. Especially India being a vast country with diversity, we have seen different types of culture all over. Right from Kashmir to Kanyakumari and from Narmada to Brahmaputra, we have seen how animals and human beings co-exist. If you talk about animals, especially Mr. Siva was talking about Jallikattu, of course, farmers are also human beings. They also need some recreation and entertainment. As I said, animals and human beings co-exist. They love their animals. When I see here, they talk of cow and bull. I come from the coastal part of Karnataka where the agricultural activities are mainly dependent upon buffaloes. We groom buffaloes; we love buffaloes. During the non-agricultural season, they have a buffalo race called *Kambala*, where in a muddy slushy field, there will be buffalo races with pairs of buffalo tied to ploughs. Really, it is one of the oldest traditions of Karnataka, especially in the coastal belt. It is a 900-year old tradition which has been practised.

(Contd. by BHS/2M)

-VKK/BHS-VNK/2M/3.35

SHRI B.K. HARIPRASAD (CONTD.): When it comes to buffaloes, I can see, in this country, discrimination is a part of life. Whereas the cow is protected very well, buffaloes are totally neglected. Sir, I was shocked about PETA. I believe in non-violence on any kind of animals whether it is cow, buffalo or chicken or whatever it is. I believe in that but when it comes to horses, horse is also a part of the agricultural activities but in most of the places, especially, in Delhi and Bangalore, there are huge horse races. The jockey sits on the horse, whips the horse but no PETA goes there because it is the sport of the elite. When it comes to the sports of the farmers, definitely, these PETA or whatever the organisations, they raise objections whether it is *Jallikattu* or *Kambala*. Sir, for *Jallikattu*, as Shrimati Vijila and Mr. Siva said, they groom the bulls with love and affection as we groom the buffaloes with love and affection. We do not treat them as enemies or treat them cruelly. All the 365 days, we groom them, we feed them and only once in a year, after the completion of agricultural activities, as a kind of sport, we encourage these farmers. Unfortunately, it was banned almost ten years back. Mr. Oscar is the patron of this *Kambala* sport in Udupi and Mangalore. He knows pretty well better than me. These animals contribute to the

development of the region. As we all know, today, India is the largest producer of milk in the world. That is because we protect and groom these animals whether it is buffaloes, cows or bulls. It is not *Jallikattu* alone or buffalo race or the horse races, even as Bhaskar*ji* said, the cock fights. In some places we have goat fights. All these animals also need some sports. I think there should not be any objection to this. I thank Mr. Jairam Ramesh for giving me permission to speak before him because I have to catch a flight. So my support is to Mr. Siva regarding this. There should not be discrimination against buffaloes because it does not mean that we should only protect cows. Buffaloes are also a part of our life and the milk of buffaloes has got more protein than the cow. It should also be protected. ...(Interruptions)... I do not go into the religious aspect. Sir, as you know, even in Assam the goat fights are there. We have been seeing. So, I think, what Mr. Siva has moved is a commendable Resolution. I think the

Government should come out and support this. Thank you very much, Sir.

(Ends)

श्री मेघराज जैन (मध्य प्रदेश) : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, तिरुची शिवा जी ने जो संकल्प प्रस्तुत किया है, वह वास्तव में स्वागत योग्य है। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में संपूर्ण बात यानी सभी विषयों को लिया है। मैं आपके माध्यम से माननीय कृषि मंत्री जी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि किसान के लिए गाय और बैल इसलिए आवश्यक है, क्योंकि खेत का wastage बैल खाए, गाय खाए और गाय का wastage खेत खाए ताकि इससे किसान की लागत कम हो जाए। यह आवश्यक है और हमने यह प्रयोग करके देखा है। जैविक कृषि के लिए गोबर आवश्यक है, जब कि आज हमारी स्थिति यह हो रही है कि हमारी भूमि खराब हो रही है, जैव विविधता नष्ट हो रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है, हमारा जल प्रदूषित हो रहा है, रासायनिक कीटनाशक और रासायनिक खाद के कारण अनाज प्रदूषित हो रहा है और उसके कारण अनेक बीमारियां हो रही हैं। अगर जैविक खाद का प्रयोग किया जाए, तो हम इन सब बीमारियों से बच सकते हैं, स्वस्थ रह सकते हैं और अपने पशुओं को बचा सकते हैं। इसके साथ ही हम इस तरह से किसान की लागत कम कर सकते हैं। ये सब इसके वैज्ञानिक कारण हैं और केन्द्र सरकार के जो अनुसंधान केन्द्र हैं, वहां के वैज्ञानिकों ने इसके बारे में अनुसंधान किया है। जिस समय मैं करनाल के अनुसंधान केन्द्र में था, उस समय जब वहां पर एक युवा वैज्ञानिक बोलने के लिए खड़ा हुआ, तो जिन्होंने यहां पर Jersey और Holstein लाने का विचार किया था, जो रिटायर हो गए थे, उनके पैर छू

कर उन्होंने कहा कि सर, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ, आप हमारे गुरु हैं, पर अगर मेरा वश चलता, तो मैं आपको फांसी पर लटका देता।

(2एन/एनकेआर-आरएल पर जारी)

NKR-RL/2N/3.40

श्री मेघराज जैन (क्रमागत) : मैं वहां उस कार्यक्रम में मौजूद था। उन्होंने कहा कि जो जरसी का दूध और Holstein का दूध है, वह देश के लिए घातक है और बीमारी का कारण है। गेहूं के बारे में अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर गाय का मूत्र, बैल का मूत्र, पानी के साथ खेतों में दिया जाए तो हमारी गेहूं की फसल अच्छी होगी। गन्ने पर रिसर्च करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि गन्ने के खेत में अगर गौमूत्र का पानी दिया जाए तो गन्ना लंबा होगा, मोटा होगा और मीठा होगा। उसमें शक्कर ज्यादा होगी। ऐसा वैज्ञानिकों ने कहा है। मेरा कहना है कि वैज्ञानिकों की एक कमेटी गठित करके कृषि मंत्री जी इस बारे में देखें।

आज हिन्दुस्तान के अंदर लगभग 200 गौशालाएं ऐसी हैं, जहां गौमूत्र पर आधारित औषधियां बन रही हैं। मनुष्य उनका लाभ ले रहे हैं। मैं स्वयं, जब मेरी तबियत खराब होती है या जरूरत पड़ती है तो गौमूत्र का सेवन करता हूं। अनेक लोग गौमूत्र का सेवन करते हैं। गौमूत्र पर आधारित हमारे यहां अनेक गौशालाएं चल रही हैं, जो किसी अनुदान पर आश्रित नहीं हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि समग्र रूप से गाय के बारे में, बैलों के बारे में हम ध्यान केन्द्रित करें। आज देश में हम जितना कीटनाशक प्रयोग करते हैं, उससे हमारा पानी खराब हो रहा है। गौमूत्र के प्रयोग में कुछ लगता नहीं है। यदि

गाय का मूत्र एकत्रित किया जाए और इसके साथ हमारे किसान नीम, करंज के पत्ते, सीताफल के पत्ते, बेशर्म के पत्ते, धतूरे के पत्ते और थोड़ा आकरा डालकर, उबालकर, उसका कीटनाशक बना लें, फिर कोई दूसरा कीटनाशक डालने की जरूरत नहीं है। इसे हमारा किसान अपने घर में तैयार करके पैसा बचा सकता है और हमें प्रदूषण से भी मुक्ति मिल सकती है। इसलिए मेरा निवेदन है कि तिरुची शिवा जी ने जो संकल्प सदन में प्रस्तुत किया है, उनके संकल्प पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। अभी हमारे यहां वलसाड के पास वागलधारा नामक एक स्थान है, जहां कैंसर का निशुल्क उपचार पंच-द्रव्यों से होता है। वहां लोगों की भारी भीड़ लगी रहती है। वैसे ही बीकानेर में पंच-द्रव्यों का प्रयोग करके एक अस्पताल खोलने की तैयारी चल रही है। इसके अलावा टाटा मैमोरियल कैंसर अस्पताल में भी इस पर प्रयोग हुआ और पाया गया कि जो लोग गौमूत्र का सेवन करते थे, उनका हीमोग्लोबिन कीमोथेरेपी के बाद भी गिरता नहीं है। इसलिए इन सब चीजों पर वैज्ञानिक आधार पर अनुसंधान सरकार द्वारा कराया जाना चाहिए। जहां प्राइवेट लोग यह काम करते हैं, उस पर कई लोग विश्वास करते हैं, कुछ नहीं करते हैं। इसलिए मेरा माननीय कृषि मंत्री जी से निवेदन है कि इन सभी लोगों की एक कमेटी बनाई जाए। कानपुर गौशाला में, हमारे तोशनीवाल जी ने ऐसा यंत्र बनाया है, जो काम एक tractor करता है, वे सारे काम बैलों को चलाकर उस यंत्र से किए जा सकते हैं। बैल से बिजली पैदा की जा सकती है, बैल से चक्की चलाई जा सकती है, बैल से थ्रैशर चलाए जा सकते हैं। हमारी जो केन्द्र सरकार की कृषियंत्र निर्माण से संबंधित कार्यशालाएं हैं, वहां उसी प्रकार के यंत्र बनने चाहिए और किसानों

को वे यंत्र दिए जाने चाहिए ताकि हमारे बैल भी सुरक्षित रहें, किसान की लागत भी कम आए और जैविक कृषि भी हम गोबर से कर सकें। इन सारे कामों को करने के लिए मैं कृषि मंत्री जी से निवेदन करता हूं और तिरुची शिवा जी ने जो संकल्प सदन में रखा है, मैं उसका अनुमोदन करते हुए निवेदन करता हूं कि उन्होंने कृषि मंत्री जी से जो सिफारिश की है, उस सिफारिश में मैं उनका साथ देता हूं। मुझे ईर्ष्या हो रही है कि ऐसा संकल्प मुझे यहां रखना चाहिए था, लेकिन उन्होंने इसे सदन में रखा। काश मुझे इसे यहां रखने का मौका मिलता। इन शब्दों के साथ मैं उनका अभिनंदन करता हूं और संकल्प का समर्थन करता हूं।

(समाप्त)

SHRI JAIRAM RAMESH (KARNATAKA): Sir, I rise to oppose Mr. Tiruchi Siva's Bill. Mr. Tiruchi Siva is an old friend of mine. He has also gained Parliamentary fame for his Private Member's Bill. His earlier Private Member's Bill created history. But before I speak on his Bill, let me say straightway....

SHRI TIRUCHI SIVA: It is a Resolution and not a Bill. ...(Interruptions)... Mine is a Resolution and not a Bill.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, before I speak on his Bill....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): No; you have to speak on the Resolution.

SHRI JAIRAM RAMESH: Let me say straightway that all my life I have been inspired by Silappadikaram, Manimekalai and Thirukkural. My wife is a Tamilian and I am as much a Tamilian as *Amma* was. If *Amma* was a Tamilian, I am also a Tamilian. So, I am a great admirer and a student of Tamil history and Tamil culture. I myself have written a number of articles on the Tamil Nadu model of development which is far superior to the Gujarat model of development.

(Contd. by DC/2O)

-RL/DC-DS/2O/3.45

SHRI JAIRAM RAMESH (CONTD.): So, I want to say this. What I am now going to say, I am sure, will not appeal to many of my friends here in the House because the objective of Mr. Siva is not animal welfare. The objective of Mr. Siva is not organic farming. यहाँ गलती से कृषि मंत्री को बिठाया गया है, असली निशाना तो पर्यावरण मंत्री हैं। पर्यावरण मंत्री को यहाँ ...(व्यवधान)...

SHRI TIRUCHI SIVA: You cannot decide about my intention... ...(Interruptions)...

श्री जयराम रमेश : निगाहें और कहीं, निशाना और कहीं! His real objective is not organic farming. His real objective is not improving agricultural practice. His real objective is not animal welfare. His real objective is to bring back

Jallikattu. That is his real objective. Mr. Tiruchi Siva has given 16 reasons for improvement in Indian agriculture and Radha Mohan Singh*ji* will agree with all of them. I also agree with all of them. Organic farming must be promoted. केमिकल फर्टिलाइज़र्स के इस्तेमाल पर कुछ नियंत्रण होना चाहिए। Traditional agricultural practices should be encouraged. इसमें कोई दो रायें नहीं हो सकती हैं। Farm mechanization should not destroy the animal economy. I agree with it 100 per cent. My friend Basawaraj Patil*ji* said that cow is a *Kamadhenu*. Yes; cow is a *Kamadhenu.* We should protect, preserve and worship this *Kamadhenu* along with the other dark *Kamadhenu*, the buffalo, which is, unfortunately, neglected in our society. So I agree with all that has been said, but, to do all this, जैन साहब, सुनिए। आपका मकसद सही है, पर आपके मकसद को पाने के लिए शिवा जी क्या करना चाहते हैं? ये Prevention of Cruelty to Animals Act में संशोधन लाना चाहते हैं। यह अजीब-सी बात है! ...(व्यवधान)...

श्री मेघराज जैन : मैं बताना चाहता हूँ कि जो पशु क्रूरता निवारण अधिनियम है, उसमें केवल 200 और 250 रुपये तक का जुर्माना है। मैं सात साल तक गोसंवर्धन बोर्ड का अध्यक्ष रहा हूँ और मैं जानता हूँ कि लोग इस अधिनियम का किस प्रकार से दुरुपयोग करते हैं। उसके अंतर्गत लोग इतने बैल और गाय हत्या करने के लिए ले जाते हैं, लेकिन उनके ऊपर कोई कार्रवाई नहीं होती है, इसलिए उसमें संशोधन होना चाहिए।

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, may I continue? The Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, यह कैसे बना? मुझे अफसोस है कि शिवा जी ने इस ऐक्ट का गौर से विश्लेषण या अध्ययन नहीं किया। राज्य सभा की एक नॉमिनेटेड मेम्बर हुआ करती थीं, जो एक मशहूर महिला थीं और उनका नाम रुक्मिणी देवी अरुंडेल था। ...(व्यवधान)...

कृषि मंत्री (श्री राधा मोहन सिंह) : सर, हमारी एक मीटिंग है, इसलिए मैं अभी जा रहा हूँ। हमारे राज्य मंत्री यहाँ बैठे हैं, मैं फिर आ जाऊँगा।

श्री जयराम रमेश : सर, सन् 1952 से लेकर सन् 1962 तक रुक्मिणी देवी जी नॉमिनेटेड मेम्बर रहीं। Rukmini Devi Arundale, a pure blooded Tamilian, was a Nominated Member of this House from 1952 to 1962. She moved a Private Members' Bill that India must have an Act for prevention of cruelty to animals. उन्होंने उस प्राइवेट मेम्बर्स बिल को पेश किया। उस समय के प्रधान मंत्री, पंडित नेहरू उससे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने रुक्मिणी देवी जी से यह निवेदन किया कि आप यह बिल withdraw कीजिए, सरकार एक कानून बनाएगी। तब सन् 1960 में Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960 बना। संविधान के कुछ प्रावधान थे और उन प्रावधानों के तहत वह ऐक्ट बनाया गया।

(2पी/एमसीएम-केआर पर जारी)

MCM-KR/2P/3.50

श्री जयराम रमेश (क्रमागत) : अब तिरुची शिवा जी क्या करना चाहते हैं? तिरुची शिवा जी इस एक्ट में संशोधन लाना चाहते हैं और वे क्या संशोधन लाना चाहते हैं? इन्होंने कहा है : Bull must be removed from the Prevention of Cruelty to Animals Act. Why? Because bull must be trained; and bull must be equipped for agriculture. I want to inform my friend, he can do all these things without amending the Prevention of Cruelty to Animals Act. Now, all that you have said in the Resolution about bulls, I agree with. But my difference with you is this. The State Government is fully empowered. All States are fully empowered to pass their own laws for improving the quality of livestock. You don't need to amend the Prevention of Cruelty to Animals Act. The Prevention of Cruelty to Animals Act is to prevent cruelty. It is not meant to train bulls. It is not meant to improve the milk yield. It is not meant to improve organic agriculture. It is meant to prevent cruelty to animals. That's it. ..(Interruptions).. I will take two minutes and conclude. The Tamil Nadu Assembly had passed the Tamil Nadu Animal Preservation Act, 1958; and most States have passed Animal Preservation Acts because according to Entry 15, List-II of the Indian Constitution, it says, "State is responsible for preservation, protection and improvement of animal stock and

prevention of animal disease." यानी कि राज्य सरकार का पूरा अधिकार है कानून बनाने के लिए, उत्पादकता बढ़ाने के लिए। Why doesn't the State Government amend the Tamil Nadu Animal Preservation Act, 1958 to fulfill the 16 objectives that you want to fulfill through your amendment to the Prevention of Cruelty to Animals Act? सर, मैं जल्लीकट्टू में नहीं पड़ना चाहता हूं। यह बहुत भावुक मुद्दा बन गया है। मैं साफ कर देना चाहता हूं, जो मैं यहां कह रहा हूं, वह मैं यहां व्यक्तिगत रूप में कह रहा हूं, क्योंकि मेरी पार्टी ने भी यह स्टैंड लिया है कि जल्लीकट्टू होना चाहिए पर मैं जल्लीकट्टू के विरोध में रहा हूं। मैं जब पर्यावरण मंत्री था, तभी मैंने यह निर्णय लिया था कि जल्लीकट्टू पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने मेरे निर्णय को सही बताया। पर बाद में बहुत कुछ चला और वह जल्लीकट्टू का चैप्टर अब बंद हो चुका है, उसको मैं नहीं खोलना चाहता हूं। अभी तमिलनाडु को पूरा अधिकार है कि साल के एक दिन में जल्लीकट्टू बनाने का और कोई नहीं रोक सकता, कानून नहीं रोक सकता। पर उसके बाद अब यह बिल लाना मुझे नहीं पता चलता कि इसका मकसद क्या है? जल्लीकट्टू आज भी हो सकता है, आज के कानून के आधार पर! Let me translate it for you. According to the laws of the land passed by this Government with the cooperation of all parties Jallikattu is permitted. Now, what do you hope by amending the Prevention of Cruelty to Animals Act? I fail to understand. There is nothing. Let me say once again very clearly, please read the Act. There is nothing in the Act that prohibits the State

Government from doing any of the 16 things that you wanted. There is nothing in the Act.

(Continued by 2Q/KS)

KS-SC/2Q/3.55

SHRI JAIRAM RAMESH (contd.): The Act only prevents cruelty. How can you remove a bull? Tomorrow, you would start removing animal after animal and you would not have any Prevention of Cruelty to Animals Act! So, why do you want to remove only the bull? The reason why you want to remove the bull is that it is because of *jallikattu*. But on *jallikattu* you have already got the Government pass an Ordinance. That Ordinance became a law; the Assembly approved it. Jallikattu can now be performed. Fourteen people have died because of *jallikattu* this year. उसके बारे में कोई शोक व्यक्त नहीं करता है। 14 व्यक्ति मारे गए हैं, जल्लीकट्टू की वजह से, लेकिन उसका कोई ज़िक्र नहीं होता है। वह सब छोड़िए, ये छोटी-छोटी बातें हैं। आप जल्लीकट्टू कर सकते हैं, धूम-धाम से मना सकते हैं, लेकिन इस कानून में संशोधन क्यों लाना चाहते हैं? Sir, Mr. Tiruchi Siva is a very, very close friend of mine. Our friendship goes back many years. I agree with the 16 reasons that he has given for his Resolution. But I disagree with the conclusion of this Resolution. The 16 reasons -- Sudarshan Bhagatji is here -- आपके लिए हैं, लेकिन ये जो दो तीर

अंत में इन्होंने मारे हैं, वे आपके लिए नहीं हैं क्योंकि उसका और इन्होंने यह जो विश्लेषण किया है, इन दोनों के बीच में कोई संबंध नहीं है। So, I request Mr. Siva not to persist with this Resolution; Rather, he should persist with putting pressure on the Government to promote organic farming, to promote animal welfare, to improve animal productivity, to improve dairying, to protect indigenous breeds, to protect indigenous varieties and so on. He should not persist with this folly of amending the Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, which has stood this country well.

Sir, when passing this Bill in 1960, Rukmani Devi had said, "The test of a civilized society is how it treats its animals." If Mr. Tiruchi Siva's amendments are approved, I am afraid, we would have opened the doors for becoming an uncivilized society.

(Ends)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Thank you. Shri D. Raja. You have only two minutes.

SHRI D. RAJA (TAMIL NADU): Sir, at the outset, I congratulate our colleague, Mr. Tiruchi Siva, for this Resolution.

What is the essence of this Resolution? The essence is to urge upon the Government to:-

(a) suitably amend the Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, which has been referred to by my colleage, Shri Jairam Ramesh, to exempt bulls from the application of provisions that restrict their utility and training for various purposes by use of various techniques to train them to perform agricultural tasks such as ploughing and transportation;

(b) include the amended Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, in the Ninth Schedule to the Constitution of India; and

(c) take steps to encourage and incentivise the use of indigenous cattle for agricultural purposes and improve their health and stock."

This is the essence of the Resolution, Sir.

Before making my observations, I must salute the youth of Tamil Nadu, the students who came together and gave a collective expression to the aspirations of the Tamil people on the issue of *jallikattu*. Yes, this Resolution does have a context. It has reference to the recent events in Tamil Nadu where people wanted *jallikattu;* all political parties wanted *jallikattu*. The youth came together and stood by what they believed in. It is a part of the Tamil culture. It is a part of the Tamil tradition.

(CONTD. BY RSS/2R)